
किसान आन्दोलन

unacademy

Welcome To Plus Class

© Dr. Amit K



Dr. Amit Kumar Singh

unacademy

NTA UGC NET HISTORY

© Dr. Amit Kumar Singh

Peasant Movements

Dr. Amit Kumar Singh

किसान आन्दोलन

(Peasant Movement)

- ब्रिटिश राज के औपनिवेशिक काल में बदली हुई भूमि व्यवस्था व भू-राजस्व की नवीन पद्धतियों में कृषकों का शोषण सर्वाधिक हुआ।
- जमींदारों, साहूकारों, महाजनों, आदि के शोषणकारी चरित्र ने किसानों की स्थिति बद से बदतर बना दी थी।
- बढ़ी हुई लगान ने कर्ज व बेगारी के दुष्चक्र में किसानों को ऐसा जकड़ा कि अब उनका सांस लेना भी मुश्किल हो गया था।
- अतः कृषकों ने अपने शोषण के विरुद्ध व अधिकारों की प्राप्ति हेतु कई विद्रोह/ आन्दोलन किए।

© Dr. Amit Kumar Singh

- समायानुसार इन विद्रोहों के स्वरूप में बदलाव आया।
- 19वीं शताब्दी के विद्रोहों के पीछे महज स्थानीय कारण व मुद्दे ही थे, इसलिए ये स्थानीय स्तर तक ही सीमित रहे।
- कई स्थानीय विद्रोहों का चरित्र एक जैसा था, क्योंकि वे वहाँ की समान पृष्ठभूमि के कारण उत्पन्न हुए थे।
- 19वीं शताब्दी के किसान आंदोलन की ज्यादातर मांगे आर्थिक थी और उन्होंने सरकार के विरुद्ध आवाज उठायी।
- उनका दायरा सीमित था तथा संघर्ष में न तो निरंतरता थी न दीर्घकालीन संगठन।
- ये किसान बदलाव के लिए नहीं, बल्कि यथास्थिति बरकरार रखने के लिए लड़े और इनका नेतृत्व स्थानीय लोगों ने किया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इसलिए इनके प्रति अंग्रेजों का रवैया समझौतापूर्ण व नरम रहा।
- 20वीं शताब्दी के किसान आंदोलन और राष्ट्रीय आंदोलन ने एक दूसरे को प्रभावित किया।
- अखिल भारतीय किसान सभा ने 'जमींदारी उन्मूलन' जैसी व्यापक समस्या का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास किया।
- पुनश्च इस शताब्दी के किसान आन्दोलनों का नेतृत्व राष्ट्रीय नेताओं के हाथ में चला गया।
- आदिवासी किसान विद्रोहियों ने जातीय आधार पर अपने को संगठित किया तथा धार्मिक नेताओं ने उन्हें नेतृत्व प्रदान किया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- कैथलीन गफ ने आधुनिक भारत के समस्त किसान विद्रोहों को पांच भागों में विभाजित किया है यथाः पुनर्स्थापनात्मक, धार्मिक, सामाजिक लूट, आतंकवादी प्रतिरोध और सशस्त्र विद्रोह।
- जिनमें से परीक्षोपयोगी विद्रोह अधोलिखित हैं यथा-

© Dr. Amit Kumar Singh

नील विद्रोह

(Indigo Riots 1859-60 ई.)

- कंपनी के कुछ अवकाश प्राप्त अधिकारी बंगाल तथा बिहार के जमींदारों से भूमि प्राप्त कर नील की खेती करवाते थे।
- वे नील उत्पादक किसानों को मामूली अग्रिम रकम देकर उनसे शर्तनामा लिखवा लिया करते थे जो बाजार के भाव से बहुत कम हुआ करता था।
- इस प्रथा को स्थानीय भाषा में 'ददनी प्रथा' की संज्ञा दी गई थी।
- यह विद्रोह बंगाल के नादिया जिले में स्थित गोविन्दपुर गाँव से 1859 में प्रारम्भ होकर 1860 तक जैसोर, खुलना, राजशाही, ढाका, मालदा, दीनाजपुर, आदि में फैल गया।

© Dr. Amit Kumar Singh



[अखिल भारतीय किसान सभा]

1859 नील विद्रोह

इतिहास

"दादनी प्रथा"



दिगम्बर विश्वास

विष्णु विश्वास

1860 – W.S. सीटोन-कार

"नील दर्पण"

हरीश चन्द्र मुखर्जी

- इस विद्रोह के स्थानीय नेता दिगम्बर विश्वास व विष्णु विश्वास थे।
- 31 मार्च 1860 में विवश होकर अंग्रेजों ने डब्ल्यू.एस.सीटोनकार (BPSC) के नेतृत्व में एक नील आयोग (Indigo Commission) नियुक्त किया।
- आयोग ने सुझाव दिया कि किसी भी रैय्यत को नील की खेती के लिए विवश नहीं किया जाएगा और सारे विवादों का निपटारा कानूनी ढंग से ही होगा।
- ध्यातव्य है कि हिन्दू पैट्रियाट के संपादक हरीशचन्द्र मुखर्जी ने इस आंदोलन का समर्थन किया।
- 1859 ई. में नील विद्रोह का वर्णन दीनबंधु मित्र ने अपने नाटक 'नील दर्पण' में किया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- यह भारतीय किसानों का प्रथम सफल आंदोलन था।

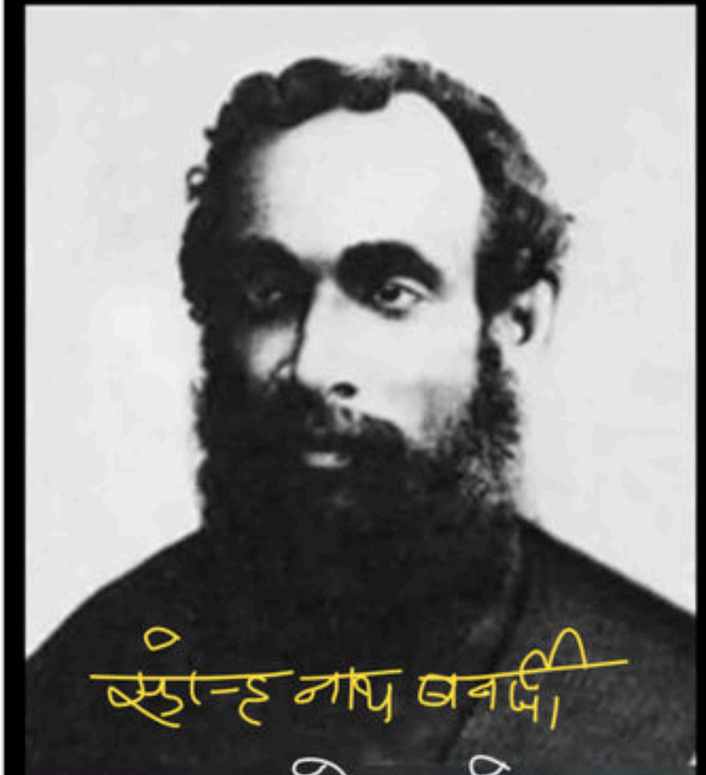
© Dr. Amit Kumar Singh

पाबना किसान विद्रोह

(Pabna Peasant Riots 1873-76 ई.)

- यह विद्रोह 1873-76 के मध्य बंगाल के पाबना जिले के युसुफशाही परगना से शुरू हुआ।
- इस विद्रोह के मुख्यतः दो कारण थे।
- प्रथम जमींदारों द्वारा लगान की दरों को कानूनी सीमा से अधिक बढ़ा देना और दूसरा 1859 ई. के अधिनियम -10 के तहत काश्तकारों को जमीन पर मिले अधिकारों से जमींदारों द्वारा वंचित करना।
- फलतः विद्रोह अपरिहार्य हो गया था।

© Dr. Amit Kumar Singh



सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

आनन्द मोहन बोस



ढाका
नाथ
गाड़ली

1873.

पाबना कृषक विद्रोह

लगान →

संघ

[बंकिम + R.C दत्त]

↓

महासभा

1885 ई०

बंगाल काश्तकारी आधि०



कैम्पबेल

लालबिहारी दे

'मुक्ति ओ मैत्री'

- अतः 1873 ई. में किसानों ने पाबना जिले के यूसुफशाही में किसान संघ की स्थापना की और किसानों को संगठित करना आंरभ कर दिया।
- संगठित किसानों ने अहिंसक लड़ाई की, जुलूस निकाले, लगान हड़ताल की अर्थात् लगान देने से मना कर दिया।
- हिन्दू-मुसलमान सभी एक साथ होकर अपने अधिकारों के लिए कानूनी लड़ाई लड़ी।
- पाबना विद्रोह का समर्थन बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय तथा रमेश चन्द्र दत्त आदि बुद्धिजीवियों ने किया।
- इसके साथ ही 'इण्डियन एसोसिएशन' के सदस्य सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, आनन्दमोहन बोस तथा द्वारकानाथ गांगुली आदि ने किसानों के हितों की रक्षा के लिए अभियान चलाया एवं सभाएँ आयोजित की।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इस विद्रोह के प्रमुख नेता ईशानचन्द्र राय, शंभुपाल तथा, केशव चन्द्र राय एवं खोदी मल्लाह आदि थे।
- लेफ्टिनेंट गवर्नर कैम्पबेल ने भी पाबना विद्रोह का समर्थन किया क्योंकि यह विद्रोह अंग्रेजी शासन के विरोध में न होकर जमींदारों के विरोध में था।
- इनके नेताओं ने यह नारा भी दिया था कि "हम महारानी और सिर्फ महारानी की रैय्यत होना चाहते हैं।"
- इसी कारण सरकार की ओर से इस आंदोलन को दबाने की कोशिशें सिर्फ भारतीय दंड संहिता के प्रावधानों तक ही सीमित रहीं और सशस्त्र दमन नहीं किया गया जैसा कि संथाल और मुंडा व अन्य जनजातियों के विद्रोह के विरुद्ध किया गया था।

©Dr Amit Kumar Singh

- इस प्रकार सरकार ने पाबना विद्रोह के जांच के लिए एक आयोग का गठन किया जिसकी सिफारिश पर 1885 का बंगाल काश्तकारी अधिनियम (बंगाल प्रजास्वत्व कानून) पारित हुआ।
- जिसके द्वारा किसानों को उनकी जमीन वापस कर दी गई।
- ध्यातव्य है कि इस आंदोलन को लेकर मुशर्रफ हुसैन ने 'जमींदार दर्पण' नामक नाटक लिखा।

© Dr. Amit Kumar Singh

दक्कन विद्रोह (Deccan Riots 1875 ई.)

- महाराष्ट्र के पूना व अहमदनगर जिलों में अन्य रैयतवाड़ी इलाके की भांति ज्यादातर किसान कर्ज अदायगी को लेकर बाहर से आये गुजराती व मारवाड़ी महाजनों के शिकंजे में फंसे हुए थे।
- 1860 के दशक में अमरीकी गृहयुद्ध से कपास के निर्यात में बढ़ोत्तरी हुई जिससे उनकी कीमतें बढ़ी।
- परन्तु 1864 में गृहयुद्ध समाप्त होने के कारण कीमतों में भारी गिरावट आ गयी।
- 1867 में सरकार ने लगान की दर में 50 प्रतिशत वृद्धि कर दी।

© Dr Amit Kumar Singh

दक्कन दंगे 1875

1860 → कपास ↗

1864 → ↓ गिरावट

1867 → लगान + 50%

↙

1873-77 सालों

दक्कन उपद्रव आयोग

पुना सार्वजनिक सभा

[महाजन — ब्याज

1879 दक्कन कृषक राहत अधिनियम]



कपास

- लगातार खराब फसलों ने किसानों की कमर तोड़ दी।
- महाजनों ने इस परिस्थिति का लाभ उठाकर अधिकतम ब्याज वसूल लिए ।
- कालूराम नामक एक महाजन ने सिरूर तालुका के करडाह गाँव में जब कर्जदार बाबा साहिब देशमुख के घर पर कब्जा करने का प्रयास किया, तो किसानों व बुलोटीदारों (नाई, धोबी, बढई, लुहार, मेत्री आदि) ने महाजनों का सामाजिक बहिष्कार किया जो पूना, अहमदनगर, शोलापुर, और सतारा जिलों के गांवों में फैल गया।
- भीगथरी तालुका के सूपा इलाके में किसानों ने इकरारनामे जला डाले।
- इन उपद्रवों में हिंसक वारदातें बहुत कम हईं।

© Anil Kumar Singh

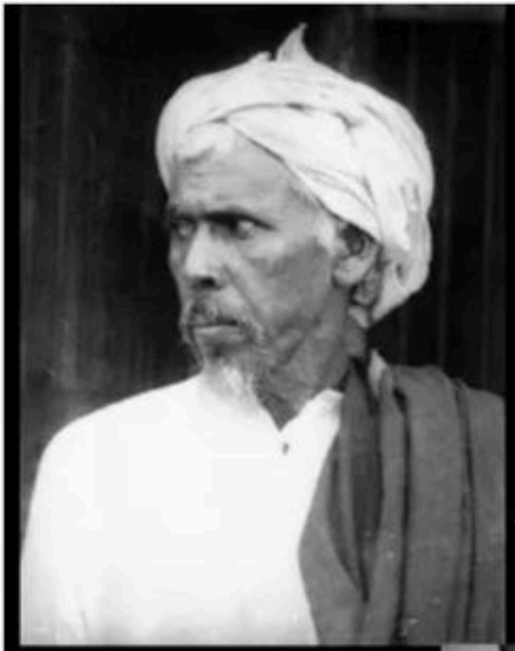
- 1873-77 में न्यायमूर्ति रानाडे के नेतृत्व में पूना सार्वजनिक सभा ने इस विरोध का समर्थन किया और भू-राजस्व अधिनियम 1867 के विरुद्ध पूना और बम्बई में किसानों के समर्थन में आन्दोलन किया।
- फलतः 'दक्कन उपद्रव आयोग' का गठन किया गया।
- आयोग के सुझाव पर दक्कन-कृषक राहत अधिनियम 1879 पारित किया गया जिससे किसानों को महाजनों के खिलाफ संरक्षण प्राप्त हुआ।

मोपला विद्रोह

(Mopla Riots)

- 8वीं एवं 9वीं शताब्दी में अरब मूल के कुछ लोग केरल राज्य के मालाबार क्षेत्र में आकर बस गये, इन्हें 'मोपला' की संज्ञा प्रदान की गई।
- ये लोग मुसलमान कृषक थे और प्रायः खेती करते थे अथवा हिन्दू जमीदारों (जिम्मी) के बंधुआ मजदूर थे।
- हिन्दू जमींदार प्राय: उच्च वर्ग के नम्बूदरी तथा नायर जाति से थे और इन्हें पुलिस कानून और कर अधिकारियों का समर्थन प्राप्त था।
- 19वीं शताब्दी में मोपलाओं की शिकायतें बढ़ गई।

© Dr. Amit Kumar Singh



1857 — 54. — 20 विद्रोह

1852. — सेपद फजल पुक्कोया + पगल 45404

1921 — गांधी → खिलाफत



233

1152

लगान

चेदथली

1836 — पहला

Ali musaliyar

[ति रुरंगाड़ी माप्पिल]



अलिम

[पुडूर की दो का लड़ाई]

- अत्यधिक लगान और निर्विचार बेदखली ने जमीदारों के विरुद्ध उनके अन्दर रोष भर दिया फलतः 1836 ई. में पहला मोपला विद्रोह हुआ।
- यह आरंभ में केवल अमीर एवं गरीब के मध्य संघर्ष था।
- किन्तु बाद में इसे साम्प्रदायिक रंग दे दिया गया।
- इस प्रकार 1836 से लेकर 1854 ई. के मध्य मालाबार क्षेत्र के एरनद और वल्लुवानाद तालुका में छोटे-बड़े कुल 20 विद्रोह हुए।
- मोपला समुदाय को धार्मिक-राजनीतिक नेतृत्व माम्बरम् के थंगल द्वारा प्रदान किया गया।
- इनमें सैयद अलावी तथा उनके पुत्र सैयद फजल पुक्कोया के नाम उल्लेखनीय हैं।

© Dr. Amit Kumar Singh

- ध्यातव्य है कि 1852 ई. में सैय्यद फजल पुक्कोया एवं थंगल को भारत से निर्वासित कर दिया गया तथा मोपला अत्याचार कानून बनाया गया।
- 1921 ई. में पुनः मोपला विद्रोह भड़क उठा जो व्यापक जनसंघर्ष वाला था।
- इसके दो प्रमुख कारण थे-प्रथम कृषि जन्य असंतोष, दूसरा अंग्रेजी सरकार के आन्दोलन के विरुद्ध नीतियाँ अप्रैल 1920 में मालाबार जिला कांग्रेस कमेटी ने मंजेरी में एक सभा की और किसानों का समर्थन किया।
- जिसके तुरंत बाद ही काजीकोड़ तथा कई अन्य स्थानों पर किसान सभाओं का गठन हुआ।
- ध्यातव्य है कि 1920-21 में गांधीजी ने असहयोग आंदोलन का नेतृत्व करते हुए खिलाफत आंदोलन का समर्थन भी किया था।

- खिलाफत आंदोलन के नेता मौलाना अबुल कलाम आजाद और शौकत अली तथा गांधीजी ने मोपला विद्रोह का समर्थन किया।
- धीरे-धीरे खिलाफत आन्दोलन व मोपला विद्रोह आपस में एकाकार हो गये।
- बढ़ते हुए कृषक प्रभावों को रोकने के लिए 15 फरवरी, 1921 को सरकार ने निषेधाज्ञा द्वारा खिलाफत की बैठकों पर प्रतिबंध लगा दिया तथा कांग्रेस नेता याकूब हसन, यू0 गोपाल मेनन, पी0 मोइउद्दीन कोया तथा के0 माधवन नायर को गिरफ्तार कर लिया गया।
- इसी समय 20 अगस्त 1921 को मजिस्ट्रेट टामस ने सेना को अलीमुसलियार जो धार्मिक नेता थे और विद्रोह का नेतृत्व कर रहे थे, उन्हें पकड़ने के लिए तिरूरांगड़ी की मस्जिद में छापा डाला।

- मुसलियार को बन्दी तो नहीं बना पाये किन्तु मस्जिद के छापे की खबर से मोपला हिंसात्मक हो गये।
- वल्लुवानाद तथा पोन्नानी तालुकों में कुछ यूरोपीय अधिकारियों को जान से मार दिया गया।
- तार की लाइनें काट दी गई, रेल की पटरी उखाड़ दी गई तथा सरकारी भवनों में आग लगा दिया गया।
- अलीमुसलियार के बाद मोपला विद्रोह का नेतृत्व वेरियन कुन्नाथ कुन अहमद हाजी ने किया।
- इस विद्रोह को दबाने के लिए सरकार ने सेना का सहारा लिया तथा हिन्दुओं को भड़काया जिससे विद्रोह साम्प्रदायिक हो गया।

© Dr Amit Kumar Singh

- मूलतः यह विद्रोह साम्राज्यवाद और सामंतवाद विरोधी जन संघर्ष था जिसमें साम्प्रदायिक भावनाओं का समावेश इसलिए हो गया कि किसान-मुसलमान तथा जमींदार-हिन्दू थे।
- 1921 के अन्त तक मोपला विद्रोह को बर्बरता से दबा दिया गया।
- उनकी बर्बरता की एक मिसाल देते हुए सुमित सरकार ने लिखा,"20 नवम्बर को पोडुनूर में रेल के एक बन्द डिब्बे में 66 मोपलों के शव मिले जिनकी मौत दम घुटने के कारण हुई थी, अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने वाला प्रत्येक विद्यार्थी सिराजुद्दौला की 'कालकोठरी' के बारे में जानता है, जो पूर्णतः काल्पनिक नहीं तो अत्यन्त बढ़ा-चढ़ा कर अवश्य कही गई है, परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि स्वतंत्र भारत में भी बहुत कम लोगों ने पोडुनूर की 'कालकोठरी' की निर्विवाद घटना के बारे में सुना है।'

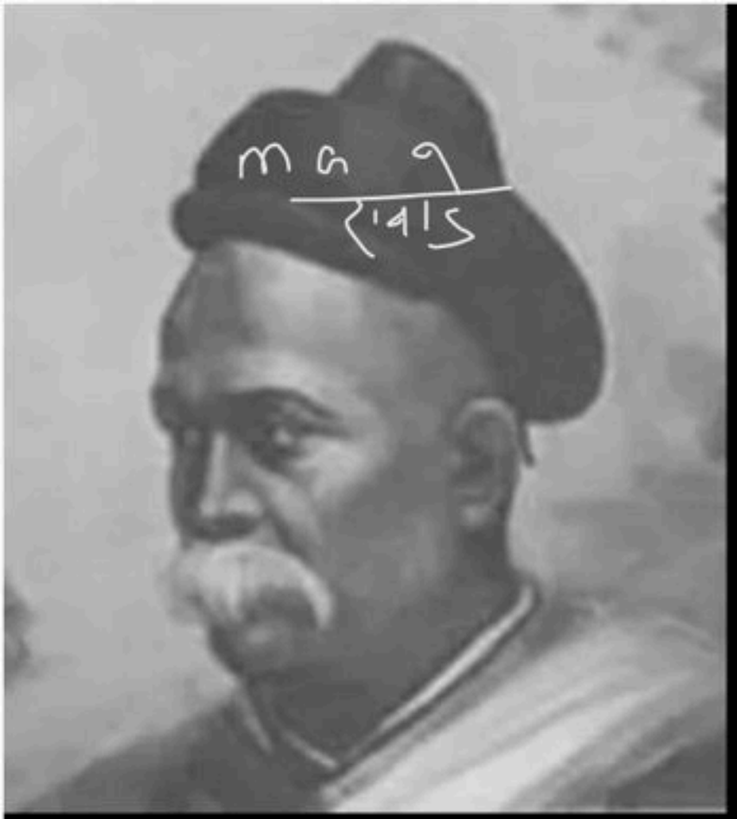
- मोपला संघर्ष में 2,337 संघर्षकर्ता मारे गए, 1,652 घायल हुए तथा 45,404 बन्दी बनाए गए ये आंकड़े अपनी कहानी स्वयं कह देते हैं।

© Dr. Amit Kumar Singh

फड़के विद्रोह (1879 ई.)

- 1857 ई0 के विद्रोह के पश्चात् वासुदेव बलवंत फड़के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सशस्त्र क्रांति द्वारा अंग्रेजों को भारत से खदेड़ कर स्वराज्य की स्थापना का स्वप्न देखा।
- फड़के का जन्म 1845 में महाराष्ट्र के कुलावा जिले के शिरढोण ग्राम में चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
- इनके पिता श्री बलवंतराय तथा मां सरस्वती देवी थी।
- इनके पितामह श्री अनंतराव फड़के ने 1818 ई. में पेशवा की तरफ से अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया था।

© Dr. Amit Kumar Singh



फुले विद्रोह (1879)

[1876-77] → [रामोसी]

उठाव 1879 अहमद →

1883 →

दौलत रामोसी — 1887

पेशवा बाजीराव



By Maharashtra state archives - Maharashtra state archives, CC BY-SA 4.0, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=115283119

- फड़के को मुख्यतः गोविन्द रानाडे के धन बहिगर्मन सिद्धान्त ने प्रेरित किया।
- साथ ही 1876-77 में पड़े भंयकर अकाल ने इनके संकल्प को और भी दृढ़ किया।
- भारत की जनता के कष्टों का एकमात्र कारण उन्होंने विदेशी शासन माना तथा सभी कष्टों व शोषण का विवरण अपनी आत्मकथा में दिया है।
- फड़के ने रामोसियों तथा महाराष्ट्र के किसानों का एक 50 सदस्यीय संगठन बनाया।
- जिसकी सहायता से ये लोग स्थान-स्थान पर खजाने लूटते थे।
- इन्होंने हिन्दू राज्य' की स्थापना का नारा दिया।

© Dr. Amit Kumar Singh

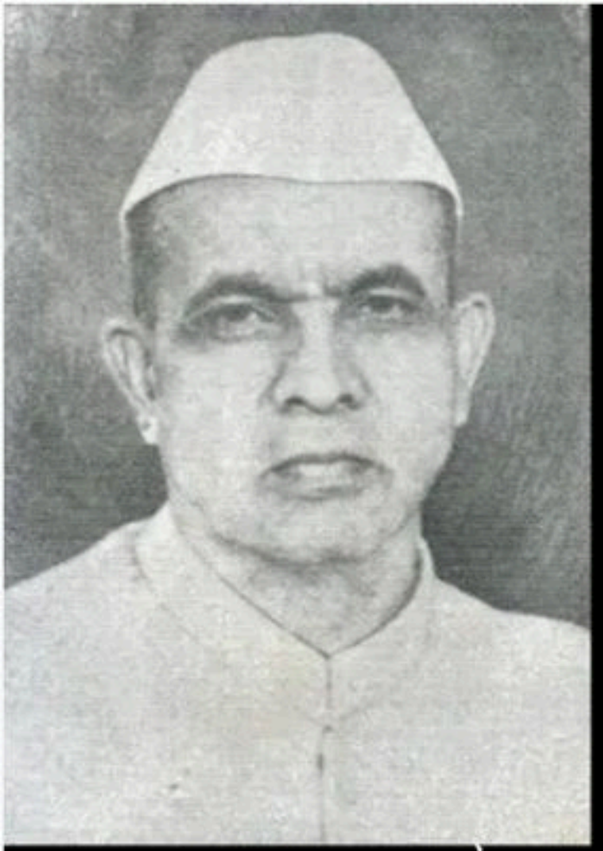
- परन्तु 21 जुलाई 1879 को निजाम सरकार के सहयोग से फड़के को गिरफ्तार कर लिया गया तथा निर्वासिन में अदन जेल भेज दिया गया।
- जहाँ पर 17 फरवरी 1883 में इनकी मृत्यु हो गयी।
- फड़के के बाद दौलता रामोसी के नेतृत्व में यह दल 1887 तक सक्रिय रहा।
- इस प्रकार वासुदेव बलवंत राव फड़के आने वाले समय में क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गये।
- चापेकर बन्धुओं ने भी इन्हीं से प्रेरणा ली।

©Dr. Amit Kumar Singh

अवध में किसान सभा आंदोलन

- संयुक्त प्रान्त में अवध के प्रतापगढ़, रायबरेली, सुलतानपुर, और फैजाबाद जिलों में ब्रिटिश सरकार की सहानुभूति की नीति ने तालुकेदारों को उनके काश्तकारों के मामले में खुली छूट दे रखी थी।
- लगातार बढ़ती हुई अवैध लगान तथा बेदखली से किसानों में रोष व्याप्त था।
- 1886 के अवध रेंट एक्ट ने नहीं के बराबर राहत पहुँचाई थी।
- 'लड़ाई के चंदो' ने युद्ध काल में किसानों को मुसीबत में डाल दिया।
- अवध में होमरूल लीग के कार्यकर्ताओं ने किसानों को संगठित करने का बीड़ा उठाया।

© Dr. Amit Kumar Singh



अवध किसान विद्रोह

कारण :-

1886 → Home Rule League

1918 उत्तर इंदिरा किसान सभा

1919 " नाई धोबी बंद "

1920 → नेहरू

फिजी → बाबा रामचन्द्र

1920 - अवध किसान सभा।

अवध मालगुजारी अधिनियम :-



- मोतीलाल नेहरू, गौरी शंकर मिश्र, इन्द्रनारायण द्विवेदी और मदनमोहन मालवीय के प्रयासों से फरवरी 1918 में 'उत्तर प्रदेश किसान सभा' का गठन हुआ।*
- किसानों द्वारा 1919 में प्रतापगढ़ जिले की एक जागीर में 'नाईधोबी बंद' सामाजिक बहिष्कार की संगठित कार्यवाही की गयी।
- झींगुरी सिंह व दुर्गापाल सिंह ने ग्राम पंचायतों के नेतृत्व में किसान बैठकों का आयोजन किया।
- फिजी से लौटे बाबा रामचन्द्र ने भी किसानों को संगठित करना शुरू किया।
- जब उन्हें चोरी के झूठे आरोप के तहत जेल भेजा गया तो किसानों ने इसका विरोध किया।

© Dr. Amit Kumar Singh

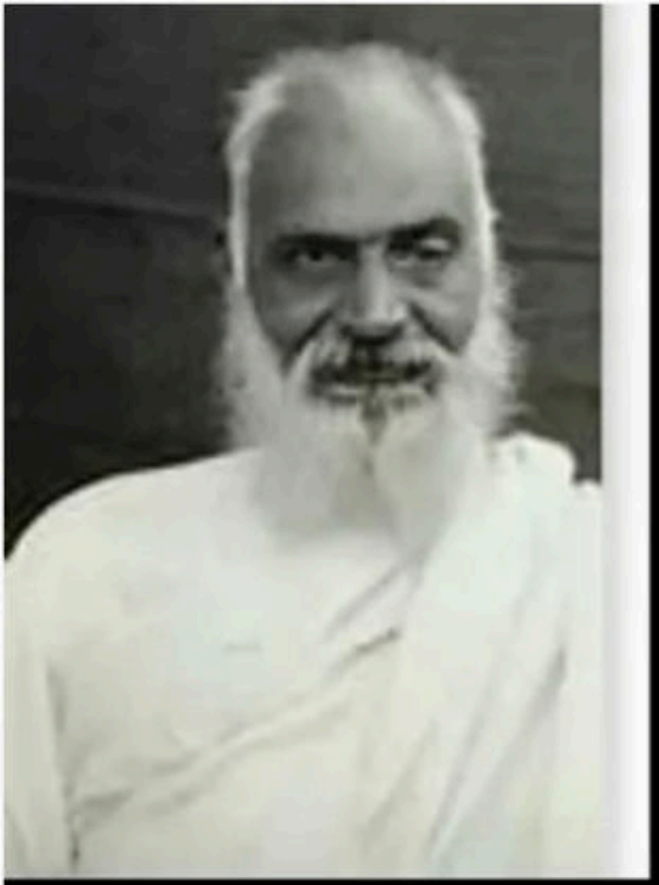
- जून 1920 में बाबा रामचन्द्र इलाहाबाद में जवाहरलाल नेहरू से मिलने गये।
- यहीं से नेहरू का 'किसानों के बीच भ्रमण' शुरू हुआ।
- 1920 में आपसी मतभेद के कारण "अवध किसान सभा' का गठन किया गया।
- रायबरेली, फैजाबाद व सुल्तानपुर में लूटपाट हुई।
- मार्च में तमाम जिलों में 'देशद्रोही बैठक अधिनियम लागू कर दिया गया, जिससे राजनीतिक गतिविधियाँ ठप्प पड़ गयी।
- अवध मालगुजारी (संशोधन) अधिनियम से किसानों को राहत तो नहीं मिली पर उनकी उम्मीदें जागीं।

© Dr. Amit Kumar Singh

खेड़ा सत्याग्रह (1918 ई.)

- गुजरात के खेड़ा क्षेत्र के कुनबी-पाटीदार किसानों ने वर्ष 1918 में अकाल पड़ने और प्लेग फैलने के कारण भू-राजस्व की उगाही सरकार से स्थगित करने की प्रार्थना की।
- किन्तु सरकार ने किसानों की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया।
- फलतः मोहन लाल पाण्ड्या के नेतृत्व में किसानों ने आन्दोलन खड़ा कर दिया।
- 22 मार्च 1918 को गाँधी जी ने इस आन्दोलन को अपने नेतृत्व में लेते हुए इसे सत्याग्रह का स्वरूप प्रदान किया।

© Dr. Amit Kumar Singh

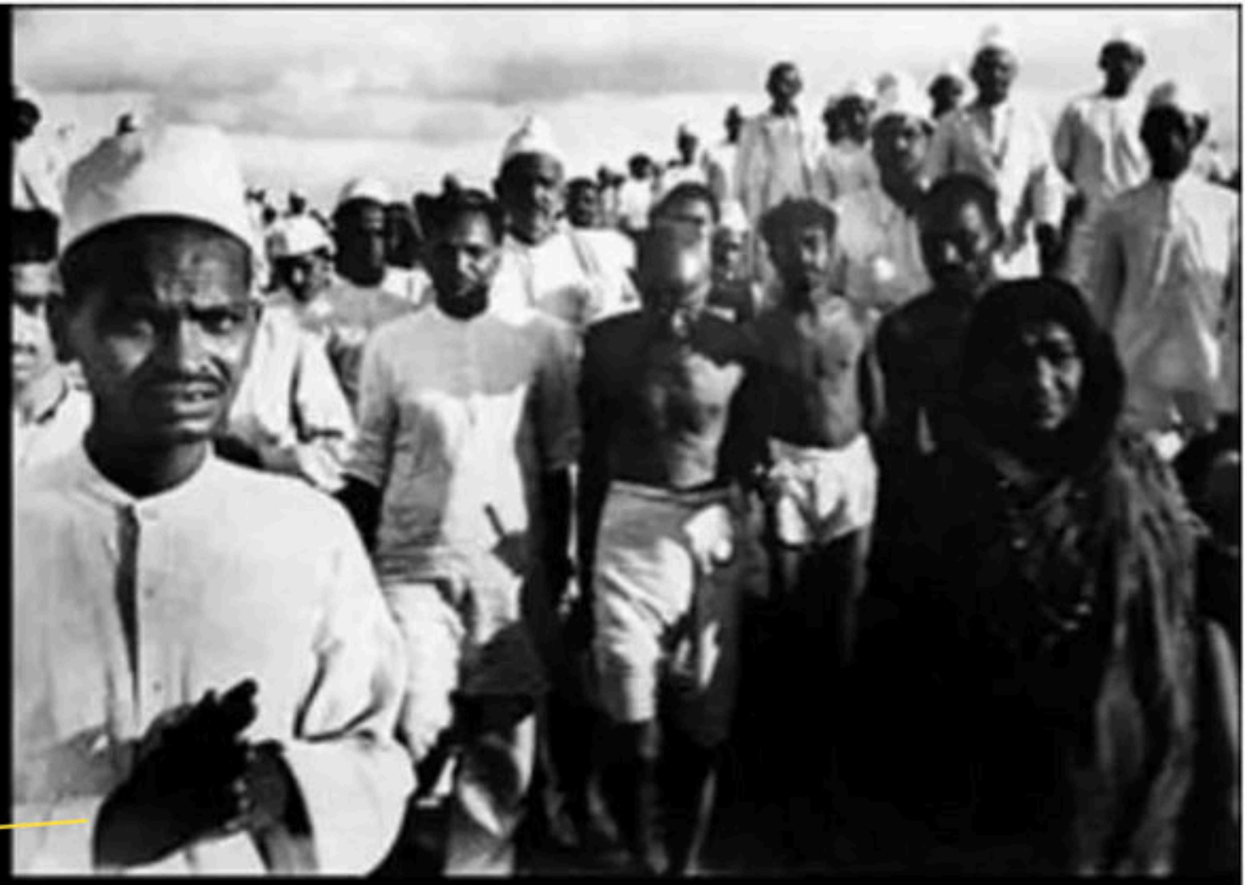


खेड़ा सत्याग्रह
(१९१८)

मोहन लाल

२२ मार्च १९१८ →

समर्थ किसान



[गुजरात सभा]

- जिससे विवश होकर सरकार ने एक दस्तावेज जारी कर केवल समर्थ किसान से लगान वसूल करने का आदेश दिया।
- इस सत्याग्रह में गांधीजी के साथ सरदार बल्लभ भाई पटेल, विट्ठल भाई पटेल एवं इंदुलाल याज्ञिक के अलावा 'गुजरात सभा' की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

© Dr. Amit Kumar Singh

एका आंदोलन (1921-22 ई.)

- एका आंदोलन 1921 ई. में अवध प्रांत के किसानों के हित में चलाया गया जिसका नेतृत्व मदारी पासी और सहदेव ने किया था।
- इस आंदोलन का प्रमुख केन्द्र हरदोई, बहराइच, बाराबंकी और सीतापुर जिलों में था।
- इस आंदोलन में सभास्थल पर गंगा की सौगंध दी जाती थी कि किसान निर्धारित लगान से एक पैसे भी अधिक नहीं देंगे।
- इसके अलावा आन्दोलनकारियों की प्रमुख मांग यह थी कि "बढ़ती महंगाई के कारण लगान का नकद में रूपान्तरण किया जाए"

© Dr. Amit Kumar Singh

एका आन्दोलन (1921)

मक्की पासी + सहदेव

गंगा | यादव पासी

काश्तकार / जमींदार

1922



- यह आन्दोलन मुख्यतः यादवों व पासियों द्वारा संचालित किया गया था।
- इन्होंने घोषणा की, कि किसान अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे, बेगारी नहीं करेंगे, सुनिश्चित लगान देगें तथा उसकी लिखित रशीद प्राप्त करेंगे।
- यह आंदोलन पहले के 'किसान सभा' आन्दोलनों से अलग था क्योंकि यह किसान आंदोलन मूलतः काश्तकारों का आंदोलन था।
- इसमें छोटे-मोटे जमींदार भी सम्मिलित थे जो सरकार से नाराज थे।
- इस आंदोलन को 1922 ई. तक सैनिकों द्वारा बलपूर्वक दबा दिया गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

बारदोली आंदोलन (1928 ई.)

- गुजरात के सूरत जिले के बारदोली तालुका में 1928 में किसानों ने 'लगान न देने' का आन्दोलन चलाया।
- गुजरात किसान आंदोलन में किसानों के अलावा कालिपराज (अश्वेतजन) नामक जनजाति के लोगों ने भी सहयोग किया।
- यह जनजाति 'हाली पद्धति' अर्थात् बंधुआ मजदूरी करने के लिए विवश थी तथा उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी।
- इनकी आबादी बारदोली तालुका में 60 प्रतिशत थी।
- गाँधीजी के द्वारा शुरू किये गये रचनात्मक कार्यों के द्वारा इनकी स्थिति को सुधारने का प्रयास किया गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

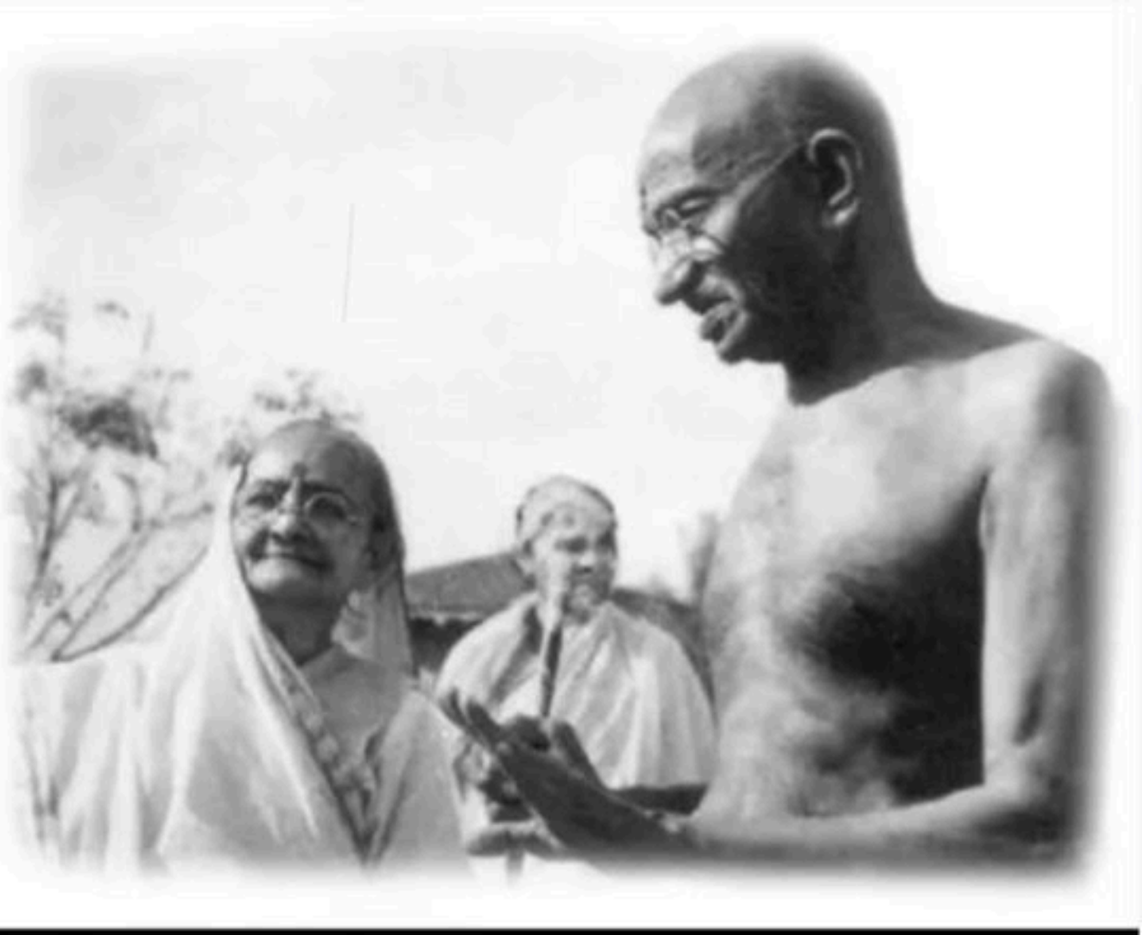

Maniben Patel

बारदोली (1928)

कालिपराज (ढाली)

60%.

कुवरजी मेहता
केशव जी
गणेश जी] →



1927 → सम्मेलन कालिपराज साहित्य

[22%] — [6.03%] — सानीपराज (वनवासी)

— सरवा

- स्थानीय नेता मेहता बंधु कल्याणजी और कुंवरजी मेहता, दयालजी देशाई और केशवजी गणेशजी द्वारा इनमें चेतना जागृत करने का प्रयास किया गया।
- कुंवरजी मेहता और केशवजी गणेश जी ने शिक्षित कालिपराज (काले लोग) के लोगों की सहायता से 'कालिपराज साहित्य' का सृजन किया और बंधुआ मजदूरी के खिलाफ आवाज उठाई।
- 1927 के बाद प्रत्येक वर्ष कालिपराज सम्मेलन होता था।
- 1927 में सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए गांधीजी ने कालिपराज का नाम बदलकर रानीपराज (बनवासी) रख दिया।
- जाने-माने नेता नरहरि पारीख और जगतराम दवे ने 'हाली पद्धति' के अमानवीय चेहरों को लोगों के सामने रखा जो न केवल आर्थिक शोषण बल्कि यौन शोषण का भी जरिया था।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इस प्रकार एक तरफ हाली पद्धति का विरोध तो दूसरी ओर 1926 में कपास की गिरी कीमतों के बाद बारदोली में लगान की दर 22.0% बढ़ा दी गयी थी
- जिसका विरोध किसानों ने किया और किसान समिति के सदस्य व स्थानीय नेता वल्लभ भाई पटेल जो खेड़ा सत्याग्रह, नागपुर फ्लैग सत्याग्रह और बलखाड़ सत्याग्रह के कारण लोगों के बीच लोकप्रिय हो चले थे, को बारदोली आने का आमंत्रण दिया गया।
- 4 फरवरी 1928 को बल्लभ भाई ने किसान आंदोलन का नेतृत्व संभाला,
- जिसका समर्थन 'सर्वेंट ऑफ इडिया सोसायटी' के माध्यम से कांग्रेस के नरमपंथी नेताओं ने किया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इस आंदोलन में महिलाओं ने भी बड़े उत्साह से भाग लिया जिसमें कस्तूरबा गांधी, बम्बई की पारसी महिला मीठ बेन, भक्तिबा (गोपाल दास की पत्नी) मनीबेन पटेल (बल्लभाई की पुत्री) शरदाबेन शाह और शारदा मेहता ने महिलाओं में जागृति लाने का सफल प्रयास किया।
- ध्यातव्य है कि बारदोली आंदोलन की महिलाओं (कस्तूरबा गांधी) के आकांक्षाओं के अनुरूप गांधीजी ने वल्लभ भाई पटेल के कुशल नेतृत्व के कारण उन्हें 'सरदार' की उपाधि से विभूषित किया था।

© Dr. Amit Kumar Singh

महत्वपूर्ण

- बिहार में तीन प्रकार की भूमि का उल्लेख है -

(1) बकाश्त भूमि - अस्थायी काश्तकारों को प्रत्येक वर्ष नीलामी या तय दरों के आधार पर प्रदत्त भूमि, बकाश्त भूमि कही जाती थी।

(2) रैय्यत भूमि - इस भूमि पर स्थायी स्वामित्व किसानों का था।

(3) जिस्ती भूमि - यह भूमि जमींदारों के स्वामित्व में आती थी जिस पर खेतिहर मजदूरों द्वारा खेती की जाती थी।

- इस आन्दोलन के जनमत से बाध्य होकर सरकार ने न्यायिक अधिकारी ब्लूमफील्ड तथा राजस्व अधिकारी मैक्सवेल द्वारा इस मामले की जांच कराई गई।
- जांच में लगान वृद्धि को अनुचित बताया गया तथा बढ़ाया गया 22.0% लगान घटाकर 6.03 प्रतिशत कर दिया गया।
- अतः यह आन्दोलन जो पूरी तरह अहिंसात्मक था, सफल रहा।

© Dr. Amit Kumar Singh

चम्पारण सत्याग्रह (1917 ई.)

- बिहार के चम्पारण जिले के किसानों को अपनी जमीन के 3/ 20 वें हिस्से में नील की खेती करना अनिवार्य था।
- इसे तिनकठिया पद्धति कहते थे।
- 19वीं सदी में रासायनिक रंगों ने नील को बाजार से बाहर कर दिया।
- अतः यूरोपियों को नील की खेती बंद करनी पड़ी।
- किसान भी यही चाहते थे।
- मालिकों ने किसानों को अनुबंध से मुक्त करने के लिए लगान व अन्य गैरकानूनी अब्बाबों (टैक्स) जैसे शरहवेशी (बढ़ा हुआ लगान) तथा तावान (एकमुश्त मुआवजा)

© Dr. Amit Kumar Singh



चम्पारन सत्याग्रह (1917)

6/20 नील X

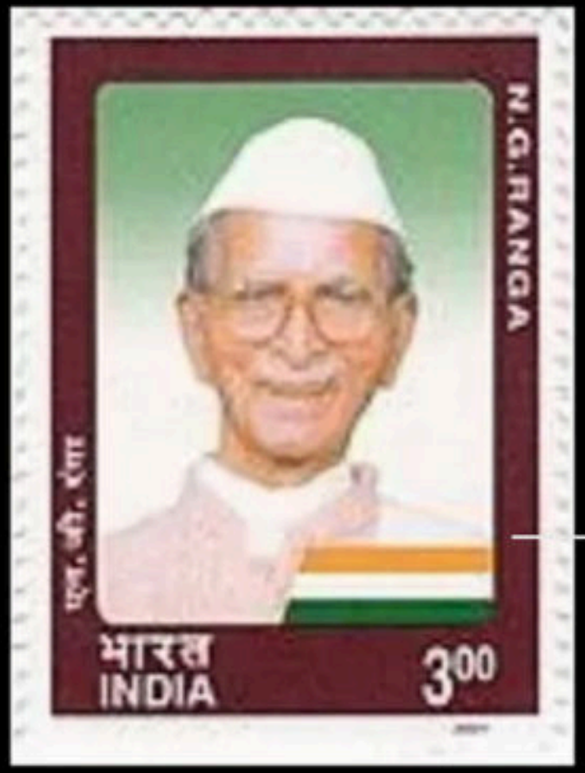
1908

तीन कठिया

जांच

राजकुमार शुक्ल

महात्मा



एन. जी. रंगा



- मालिकों ने किसानों को अनुबंध से मुक्त करने के लिए लगान व अन्य गैरकानूनी अब्बाबों (टैक्स) जैसे शरहवेशी (बढ़ा हुआ लगान) तथा तावान (एकमुश्त मुआवजा) की दर को मनमाने ढंग से बढ़ा दिया।

© Dr. Amit Kumar Singh

महत्वपूर्ण

- 'नहर टैक्स' के विरोध में वर्धमान में किसानों का नेतृत्व बंकिम मुखर्जी (1938) में किया था।
- उड़ीसा में उत्कल प्रांतीय किसान सभा की स्थापना मालती चौधरी (1935) ने की थी।
- हाट-तोला आन्दोलन उत्तरी बंगाल में चलाया गया था।
- 1943 में तीन नेताओं एन.जी. रंगा, स्वामी सहजानंद, इंदुलाल याज्ञिक ने अखिल भारतीय किसान सभा छोड़ दी थी।
- फ्लाउड आयोग से तेभागा आंदोलन प्रेरित हुआ था।

महत्वपूर्ण

- प्रथम भारतीय किसान स्कूल की स्थापना 1938 में निदुब्रोल (गुण्टूर, आन्ध्र प्रदेश) में की गई थी।
- जमींदारी-विरोधी संघर्ष (आन्ध्र प्रदेश) में वेंकटगिरि जमींदारी को (नेस्लोजिले) पहला निशाना बनाया।
- यू.पी. किसान सभा की स्थापना फरवरी, 1918 ई. में हई थी।

- 1908 में पहला विद्रोह हो चुका था।
- 1917 में राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को चम्पारण बुलाया।
- उन्होंने अपने सहयोगियों-ब्रज किशोर, सी.एफ. एन्ड्रूज डॉ0 अनुग्रह नारायण सिंह, राज किशोर प्रसाद, एच.एस. पोलाक.राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, जे.बी. कृपलानी आदि के साथ गाँवों का दौरा किया।
- सरकार ने एक जांच आयोग गठित किया, जिसमें गांधी जी को भी शामिल किया गया।
- आयोग के सुझाव पर तिनकठिया पद्धति को समाप्त कर दिया गया तथा बगान मालिक अवैध वसूली का 25 फीसदी वापस करने पर राजी हो गये।

© Dr. Amit Kumar Singh

- ध्यातव्य है कि इस सत्याग्रह के कुशल नेतृत्व से अभिभूत होकर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधी जी को 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया।
- किन्तु एन.जी. रंगा ने गाँधीजी के इस सत्याग्रह का विरोध किया था।

© Dr. Amit Kumar Singh

तेभागा आन्दोलन (1946-50 ई.)

- भारत की आजादी की पूर्व बेला में तेभागा आन्दोलन बंगाल के 28 में से 15 जिलों में नवम्बर 1946 से लेकर फरवरी 1947 तक चला।
- ब्रिटिश भारत में बंगाल का तेभागा संघर्ष कई दृष्टियों से अविस्मरणीय माना जाता है।
- यह संघर्ष मूलतः बटाईदार किसानों का संघर्ष था और इसके नेतृत्वकर्ता मुख्यतः कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह थे।
- बटाईदारों को जमीन के मालिकों को उपज का आधा और कभी-कभी तो उससे भी अधिक देना पड़ता था।
- उनके पास उनकी मेहनत का एक हिस्सा ही शेष बचता था।

© Dr. Amit Kumar Singh

तेभागा आन्दोलन (1946-50)

बटाई का किसान $\frac{1}{2}$ +

(कम्पा एम + भवन सिंह)

फ्लाउड कमीशन

$\frac{2}{3}$ हिस्सा | $\frac{1}{3}$ हिस्सा

बंगाल किसान सभा

1946 — हसनाबाद

1950 → कानून



Tebhaga Movement in Balurghat, West Bengal

- बंगाल भू-राजस्व आयोग (फ्लाउड कमीशन) ने अपनी रिपोर्ट में यह सिफारिश की थी कि किसान को उपज का 2/3 हिस्सा मिलना चाहिए और जमीन के मालिक को 1/3 भाग दिया जाए।
- बंगाल किसान सभा ने, जिसका नेतृत्व कम्युनिस्टों के हाथ में था, फ्लाउड कमीशन की इस सिफारिश को संघर्ष के बल पर लागू करने का निर्णय लिया और इस तरह जो आन्दोलन उठा उसे तेभागा आन्दोलन कहा गया।
- इस आन्दोलन में किसान फसल को काटकर अपने घर के खलिहान में ले जाता और वहीं पर जमींदार को उसका एक-तिहाई हिस्सा देता।
- ध्यातव्य है कि सितम्बर 1946 में तेभागा आन्दोलन का आरम्भ त्रिपुरा के हसनाबाद इलाके से हुआ था।

© Dr. Amit Kumar Singh

- आन्दोलन का सबसे तीव्र रूप उत्तरी बंगाल में देखने को मिला था।
- दीनाजपुर, जलपाइगुड़ी, रंगपुर और माल्दा में आन्दोलन में बहुत अधिक तेजी आई।
- इसके साथ ही मैमनसिंह, मिदनापुर और 24 परगना में भी तेभागा आन्दोलन ने जोर पकड़ा।
- शुरू के दिनों में तेभागा आन्दोलन राजवंशी समुदाय के किसानों का आन्दोलन था, लेकिन आगे चलकर, अयोध्यासिंह के शब्दों में "तेभागा आन्दोलन ने हिन्दू, मुस्लिम और आदिवासी किसान की संग्रामी एकता कायम की।"
- अन्ततः 1950 में कांग्रेस सरकार ने वर्गाधार विधेयक पारित कर आन्दोलनकारियों की मांगों की पूर्ति की।

© Dr. Amit Kumar Singh

तेलंगाना आन्दोलन (1946-51ई.)

- तेलंगाना हैदराबाद के निजाम रियासत का एक अंग था।
- इस क्षेत्र की समस्त भूमि पर निजाम का अधिकार था।
- इस भूमि पर लगभग 20 लाख किसान अपना जीवन यापन करते थे।
- इस क्षेत्र के किसानों की लगान बढ़ा दी गई और इनसे कम दाम पर अपने अनाज को बेचने के लिए बाध्य किया जाने लगा।
- फलतः किसानों ने जमींदारों, साहूकारों, व्यापारियों एवं निजाम के अधिकारी के विरुद्ध 1946 में विद्रोह कर दिया।
- विद्रोह का नेतृत्व कम्युनिष्ट नेता कमरैया कर रहे थे।

© Dr. Amit Kumar Singh

(तेलंगाना) (1946-51)

निजाम — 20 लाख किसान

कमैया।



- आन्दोलन के दौरान निजाम की पुलिस ने कमरैया की हत्या कर दी।
- फलतः आन्दोलन हिंसात्मक हो गया।
- छापामार युद्ध प्रणाली अपना कर यहाँ के किसानों ने भारतीय इतिहास में सर्वाधिक अवधि तक चलने वाले कृषक संघर्ष का नेतृत्व किया।
- किसानों ने मांग किया कि हैदराबाद रियासत को समाप्त कर इसे भारत का अंग बना लिया जाए।
- स्वतंत्रतोपरान्त यह आन्दोलन स्वतः समाप्त हो गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

वर्ली आन्दोलन (1945 ई.)

- स्वतंत्रता के पूर्व के दस वर्षों के कृषक आन्दोलनों में तीन आन्दोलनों का मुख्य स्थान है।
- यथाः तेभागा, तेलंगाना और तीसरा वर्ली आन्दोलन।
- ज्ञातव्य है कि वर्ली एक आदिम जाति थी, जो पश्चिमी भारत में बम्बई नगर से थोड़ी दूर पर रहती थी।
- ये लोग जंगलों के ठेकेदारों, साहूकारों, धनी कृषकों तथा भूमिपतियों जिन्हें सरकार का समर्थन प्राप्त था, के शोषण के विरुद्ध खड़े हो गए।
- किसान सभा की सहायता से मई 1945 में उन्होंने आन्दोलन आरम्भ कर दिया।

© Dr. Amit Kumar Singh

पर्ली आन्दोलन (1945)

मई 1945

दमन

बिसौलिया आन्दोलन

1913 — 84 लगान

बाल बिहारी — 35 Tax

1922 — किसान — हालैंड — रामा





- पुलिस के दमन चक्र से भी वे लोग नहीं झुके।
- ये लोग अधिकाधिक साम्यवादी दल के प्रभाव में थे।
- बिजौलिया आंदोलन राजस्थान में मेवाड़ क्षेत्र के बिजौलिया में 1913 ई. में किसानों द्वारा लगान न देने का आंदोलन चलाया गया।
- किसानों से उस समय 84 प्रकार के लगान वसूल किये जा रहे थे।
- प्रारम्भ में इस आंदोलन का नेतृत्व साधु सीता राम दास, फतह लाल चारण और ब्रह्मदेव ने किया।
- एक अन्य नेता नारायण बटले थे जिन्होंने कृषकों को बेगार न करने के लिए प्रेरित किया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- चारण और ब्रह्मदेव को बिजौलिया क्षेत्र से निर्वासित कर दिया गया तथा बटले को गिरफ्तार कर लिया गया।
- अब इस आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए रास बिहारी बोस तथा शचीन्द्र नाथ सान्याल ने भूपसिंह को भेजा।
- यहाँ आकर भूप सिंह ने अपने नेतृत्व में सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया।
- इन्हें भी बन्दी बना लिया गया।
- परन्तु इन्होंने जेल से भागकर एक नये नाम 'विजय सिंह पथिक' से आंदोलन में जान डाल दी।
- कृषकों के इस आन्दोलन को देखते हुए वहाँ के राजा ने 1922 ई. में एक जांच आयोग गठित कर दिया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इसी बीच भारत सरकार की तरफ से हालैण्ड नामक प्रतिनिधि बिजौलिया पहुंचा और वह वहाँ के राजा, और किसानों के बीच एक समझौता कराने में सफल रहा।
- फलतः 84 करों में से 35 करों को राजा द्वारा वापस ले लिया गया।
- आगे चलकर माणिक्य लाल वर्मा एवं जमना लाल बजाज भी इस आंदोलन से जुड़ गये।
- जमना लाल बजाज की तरफ से उपाध्याय ने बन्दोबस्त अधिकारी ट्रेंच पर दबाव डालकर समझौता कराया।
- किन्तु किसानों की पूरी भूमि वापस न हो सकी।
- लम्बे संघर्ष के बाद 1941 ई. में जाकर किसानों की सम्पूर्ण भूमि वापस हो सकी।

© Dr. Amit Kumar Singh

बकाश्त कृषक आंदोलन (1938-47).

- बकाश्त कृषक आंदोलन बिहार में जमींदारी प्रथा के विरोध में चलाया गया था।
- बकाश्त जमीन ऐसी जमीन थी, जिसे मंदी के कारण लगान न दे पाने की स्थिति में किसानों ने जमींदारों को दे दिया था यद्यपि अब उस पर किसान बटाईदार की हैसियत से खेती कर रहे थे।
- इस जमीन के विषय में कानून बनाया गया कि बकाश्त जमीन का एक भाग ही किसानों को वापस मिलेगा यदि वह उस जमीन की नीलामी के आधे मूल्य का भुगतान कर दे।

Dr Ashutosh Singh

बकाश्त किसान आन्दोलन

जमींदारी प्रथा — बटाईदार

बिहार किसान सभा ——→

650 बीघा

1939 —→ 1945

1946



- बिहार में स्वामी सहजानंद के प्रयासों से बिहार प्रांतीय किसान सभा की स्थापना हो चुकी थी और इन्हें कार्यानंद शर्मा, राहुल सांकृत्यायन, पंचानन शर्मा. यदुनंदन शर्मा और श्रद्धानन्द सरस्वती आदि प्रमुख नेताओं का सहयोग भी प्राप्त था।
- 1935 ई. में ही किसान सभा में जमींदारी उन्मूलन का प्रस्ताव पारित हो चुका था जिससे किसानों का बकाश्त संघर्ष और तेज हो गया।
- 'गया' जिले के रेवड में यदुनंदन शर्मा के नेतृत्व में संघर्षरत किसानों ने जिला मजिस्ट्रेट से यह घोषणा करवाने में सफल हो गये थे कि विवादित एक हजार बीघा जमीन में से 850 बीघा जमीन किसानों को लौटा दी जायेगी।
- इस घोषणा से प्रेरित होकर अन्य क्षेत्रों में जैसेदरभंगा के पादरी, राघोपुर, देकुल और पंडौल में किसान आंदोलन फूट पड़ा।

© Dr. Amit Kumar Singh

- सारण के किसानों का नेतृत्व यमुना कार्टी ने किया तथा अन्नवारी में नेतृत्व की कमान राहुल सांकृत्यायन के हाथों में थी।
- इस तरह बकाश्त जमीन पर संघर्ष 1938-39 तक अपने शीर्ष पर पहुंच गया।
- 1939 में सरकार द्वारा किसानों के हक में कुछ घोषणाएँ की गई परन्तु 1945 में यह आंदोलन पुनः सक्रिय हो गया और तब तक चलता रहा जब तक कि स्वतंत्रतोपरान्त सरकार ने बिहार जमींदारी उन्मूलन अधिनियम 1948 द्वारा बकाश्त किसान की समस्या का निस्तारण नहीं कर दिया।

© Dr Anil Kumar Singh

प्रमुख किसान सभा का गठन			
किसान सभा	**सस्थापक**	**वर्ष**	**क्षेत्र**
उत्तर प्रदेश किसान सभा	गौरीशंकर मिश्र,इन्द्रनारायण द्विवेदी, मदन मोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू	1918	उ.प्र.
अवध किसान सभा	बाबा रामचन्द्र	1920	उ.प्र.
आंध्र प्रांतीय रैय्यत सभा	एन जी रंगा	1928	आ.प्र.
बिहार किसान सभा	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	1929	बिहार
उत्तकल प्रांतीय सभा	मालती चौधरी	बीसवी सदी	ओडिसा
कृषक प्रजा पार्टी	फजलूलहक,अकरम खान,अब्दुर्रहीम	1929	बंगाल
अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	1936	लखनऊ
प्रथम भारतीय किसान स्कूल	एन् जी रंगा	1938	आंध्र प्रदेश

© Dr. Anil Kumar Singh

प्रमुख किसान आंदोलन			
आंदोलन/संगठन/विद्रोह	**सस्थापक/अध्यक्ष**	**वर्ष**	**प्रभावित क्षेत्र**
नील किसान विद्रोह	दिगम्बर विश्वास और विष्णु विश्वास	1859-60	बंगाल तथा बिहार
पाबना किसान विद्रोह	इशानराय, शंभूपाल,केशवचन्द्र राय,	1873-76	बंगाल
दक्कन किसान विद्रोह	जस्टिस रानाडे	1875	पुणे एवं अहमदनगर
मोपला किसान विद्रोह	सय्यद अलावी एवं सय्यद फजल पुक्कोंया बाद मे अलीमुसलियार	1836-54 एवं 1921	मलाबार क्षेत्र
फडके विद्रोह	वासुदेव बलवंत फडके	1879	महाराष्ट्र
बिजौलीया आंदोलन	साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक	1913-41	बिजौलीया
चंपारण सत्याग्रह	महात्मा गांधी	1917	बिहार
अवध किसान आंदोलन	बाबा रामचन्द्र,गौरी शंकर मित्र,इन्द्र नारायण द्विवेदी	1918-20	आगरा तथा अवध क्षेत्र

© Dr. Amit Kumar Singh

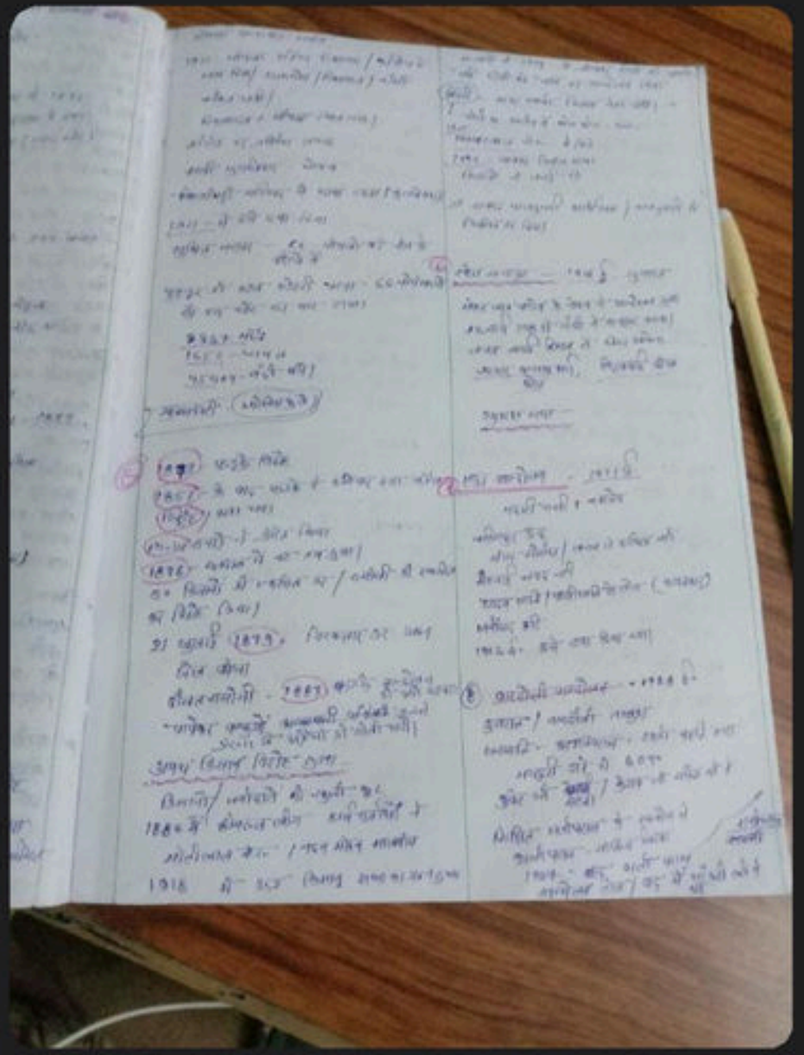
प्रमुख किसान आंदोलन			
आंदोलन/संगठन/विद्रोह	**सस्थापक/अध्यक्ष**	**वर्ष**	**प्रभावित क्षेत्र**
खेड़ा सत्याग्रह	महात्मा गांधी	1918	गुजरात
एका आंदोलन	मदारी पासी, सहदेव	1921-22	उत्तर प्रदेश
बारदोली सत्याग्रह	वल्लभभाई पटेल	1928	गुजरात
बकाश्त कृषक आंदोलन	यदुनन्दन शर्मा,यमुना कार्यी एवं राहुल सांकृत्यायन, स्वामी श्रद्धानंद	1938-47	बिहार
वर्ली विद्रोह	गोदावरी पुरुलेकर	1945	बंबई
पुन्नप्रा एवं वायलार विद्रोह	किसान एवं मजदूर	1946	त्रावणकोर
तेभागा आंदोलन	कंपाराम, भवन सिंह	1946-50	त्रिपुरा,बंगाल
तेलंगाना आदोंलन	कमरैय्या	1946-51	आंध्र pradesh

© Dr. Ajit Kumar Singh

unacademy

▲ 1 • Asked by Neha

Please help me with this doubt



पुन्नप्रा एवं वायलार विद्रोह (1946)

- पुन्नप्रा एवं वायलार केरल के त्रावणकोर (वर्तमान अलप्पी जिला) में अवस्थित हैं।
- यहाँ पर 1946 में किसान व मजदूरों ने सामंती उत्पीड़न के विरोध में विद्रोह कर दिया।
- इसमें भाग लेने वाले काश्तकार खेतिहर-मजदूर और नारियल के जूट की रस्सी बनाने वाले कारखानों के मजदूर थे।
- इस विद्रोह को बड़े ही अमानवीय ढंग से अर्थात् नर-संहार का तरीका अपना कर दबाया गया जिसमें सैकड़ों लोग मारे गये।

© Dr. Amit Kumar Singh

पंजाब में कृषक आंदोलन

- पंजाब का किसान आंदोलन मुख्यतः मध्यवर्ती जिलों जालधर, अमृतसर, होशियार पुर, लायल पुर और शेखपुरा में अधिक सक्रिय रहा।
- इन जिलों में अधिकांश किसान सिख थे और उनके पास स्वंय की भूमि थी।
- 1920 के पूर्वार्द्ध में हुए गुरुद्वारा कानून सुधार आंदोलन के कारण यहाँ का किसान आंदोलन राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बन चुका था।
- इनके प्रमुख नेता बाबा सोहन सिंह भाकना थे।
- पंजाब के पटियाला रियासत का आंदोलन सबसे शक्तिशाली था, जो मुख्यतः भू-स्वामियों व अधिकारियों के विरुद्ध था।

© Dr. Amit Kumar Singh

- जमींदारों ने किसानों की भूमि हथिया ली थी।
- अतः भगवान सिंह लोगोवाल और जागीर सिंह जोगा (वामपंथी नेता) के नेतृत्व में लगान न देने का निर्णय लिया गया।
- यह संघर्ष 1953 तक चला और बाद में किसानों को जमीन का मालिकाना हक प्राप्त हो गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

अखिल भारतीय किसान सभा

- 1920 में आरम्भ हुए किसान आंदोलन ने बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश एवं आन्ध्र प्रदेश में किसान सभाओं के गठन के लिए प्रेरित किया।
- 17 अक्टूबर, 1920 को बाबा रामचन्द्र के प्रयास से 'अवध किसान सभा' का गठन हुआ तथा 1929 में 'बिहार किसान सभा' स्वामी सहजानंद सरस्वती के प्रयास से गठित हुई।
- 1928 में "आन्ध्र-प्रांतीय किसान सभा' का गठन एन.जी. रंगा ने किया।
- 1935 में संयुक्त प्रान्त में 'किसान संघ' की स्थापना हुई।
- 1929 में फजलुलहक के प्रयास से 'कृषक प्रजा पार्टी' का गठन हुआ।

© Dr. Amit Kumar Singh

- अखिल भारतीय किसान सभा का गठन 1936 में लखनऊ में किया गया।
- 11 अप्रैल 1936 को प्रथम अखिल भारतीय किसान सभा का सम्मेलन हुआ जिसका अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती को तथा महासचिव एन जी रंगा को बनाया गया।
- इस सम्मेलन में जवाहर लाल नेहरू ने भी भाग लिया।
- सम्मेलन में 1 सितम्बर 1936 को किसान दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।
- इस सम्मेलन में राम मनोहर लोहिया, सोहन सिंह जोश, इंदुलाल याज्ञिक, जय प्रकाश नारायण, मोहनलाल गौतम, कमल सरकार, सुधीर प्रामाणिक तथा अहमददीन जैसे नेताओं ने भी भाग लिया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- सम्मेलन में निर्णय लिया गया कि किसानों का एक घोषणापत्र निकाला जाए तथा इंदुलाल याज्ञिक के संपादन में एक बुलेटिन का नियमित प्रकाशन हो।
- 1937-39 के दौरान किसान सभा ने किसानों में जागरण पैदा करने के लिए तालुका, जिला और प्रान्त स्तर पर किसान सम्मेलनों का आयोजन किया, जिसमें किसानों की मांगे पेश की जाती थी और प्रस्ताव पारित होते थे।
- सक्रिय किसान कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के निमित्त 1938 ई. में आन्ध्र प्रदेश के गुण्टूर जिले में निदुब्रोल नामक स्थान पर पहला भारतीय किसान स्कूल का शुभारम्भ किया गया।

©Dr Amit Kumar Singh

- प्रशिक्षित किसान कार्यकर्ता तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता 1942 ई. तक साथ-साथ चलते रहे किन्तु उसके बाद किसान आन्दोलन राष्ट्रीय आन्दोलन से दूर होता गया और अन्ततः उसके नेतृत्व में फूट पड़ गई।

© Dr. Amit Kumar Singh

प्रमुख श्रमिक आयोग

- भारत में मजदूरों के हित के लिए प्रथम श्रमिक आयोग 1857 में गठित हुआ।
- यह मख्यतः लंकाशायर के उद्योगपतियों की मांग पर गठित किया गया था।
- इसका उद्देश्य कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के कार्यस्थल की परिस्थितियों व वातावरण का गहन अध्ययन करके अपनी समीक्षा रिपोर्ट देना था।
- इस आधार पर स्वतंत्रता पूर्व तक कुल 6 कारखाना अधिनियम पारित किये गये।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इनमें से प्रमुख कारखाना अधिनियम, जो परीक्षोपयोगी दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, वे अधोलिखित हैं।
- यथाः
- प्रथम कारखाना अधिनियम (1881 ई.) यह अधिनियम लार्ड रिपन के कार्यकाल में पारित हुआ।
- इसके अन्तर्गत बाल श्रम को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया गया।
- सात वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों में रखने पर प्रतिबंध लगाया गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इसके साथ ही 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से 9 घण्टे से अधिक कार्य लिए जाने को प्रतिबंधित किया गया और बच्चों को महीने में कम से कम चार अवकाश अनिवार्य बना दिये गये।
- इस कानून में खतरनाक मशीनों को बाड़े से घेरने का निर्देश दिया गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

द्वितीय कारखाना अधिनियम (1891 ई.)

- यह आधिनियम लार्ड लैंसडाउन के समय पारित हुआ जिसमें स्त्रियों को 11 घंटे प्रतिदिन से अधिक काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- साथ ही बच्चों के काम करने की उम्र 7 वर्ष के स्थान पर 9 वर्ष निर्धारित की गई।
- 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए काम का समय सीमित कर प्रतिदिन 7 घण्टे कर दिया गया।
- काम के समय में 1- घण्टे का मध्यावकाश एवं सप्ताह में एक दिन साप्ताहिक अवकाश की व्यवस्था की गई।
- कारखानों में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति, उचित वायुसंचार एवं सफाई हेतु स्वयं नियम बनाने का प्रावधान किया गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

- **तृतीय कारखाना अधिनियम (1911)**
- लंकाशायर और डंडी के 1908 के फैक्टरी कमीशन की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए भारत में वर्ष 1911 ई. में लॉर्ड हार्डिंग II के समय तृतीय कारखाना अधिनियम पारित हुआ।
- जिसमें सभी फैक्टरियों में दिन में आधा घण्टा का अनिवार्य अवकाश लागू किया गया।
- कारखानों में 9 से 14 वर्ष की उम्र के बच्चों से काम न लिए जाने का भी प्रावधान किया गया।
- वस्त्र व्यवसाय बच्चों के लिए काम के अधिकतम घण्टे 6 तथा बालिग पुरुषों के लिए 12 घंटे निर्धारित किये गये।

© Dr. Amit Kumar Singh

चतुर्थ कारखाना अधिनियम (1922)

- 1921 में वांशिगटन में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के ड्राफ्ट सिफारिशों के आलोक में भारतीय विधानमंडल द्वारा लार्ड रीडिंग के समय में 1922 ई. का चतुर्थ कारखाना अधिनियम पारित हुआ।
- इसमें फैक्टरी की परिभाषा का विस्तार किया गया, फैक्टरियों के अन्तर को समाप्त किया गया,
- बाल श्रमिकों के लिए न्यूनतम उम्र 12 से 15 वर्ष किया गया, बालिगों के लिए कार्यविधि अधिकतम 11 घण्टे प्रतिदिन और सप्ताह में अधिकतम 60 घण्टे निश्चित किया गया और ओवर टाइम हेतु वेतन अदायगी की व्यवस्था की गई।

© Dr. Amit Kumar Singh

- इस अधिनियम को औद्योगिक कार्यकर्ताओं पर नहीं लागू किया गया अपितु केवल फैक्टरियों पर लागू किया गया।

© Dr. Amit Kumar Singh

बिरसा मुंडा किसके पक्ष में थे?

A. झारखंड

B. उत्तरांचल

C. छत्तीसगढ़

D. इनमें से कोई नहीं

© Dr. Amit Kumar Singh

बिरसा मुंडा किसके पक्ष में थे?

A. झारखंड

B. उत्तरांचल

C. छत्तीसगढ़

D. इनमें से कोई नहीं

© Dr. Amit Kumar Singh

'गुलामगीरी' का लेखक कौन था?

A. बी.आर. अम्बेडकर

B. ज्योतिबा फुले

C. महात्मा गांधी

D. पेरियार

© Dr. Amit Kumar Singh

'गुलामगीरी' का लेखक कौन था?

A. बी.आर. अम्बेडकर

B. ज्योतिबा फुले

C. महात्मा गांधी

D. पेरियार

© Dr. Amit Kumar Singh

इनमें से कौन बिहार में किसान आंदोलन के साथ जुड़े थे?

A. राजेंद्र प्रसाद

B. सी.आर. दास

C. मोतीलाल नेहरू

D. भगत सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

इनमें से कौन बिहार में किसान आंदोलन के साथ जुड़े थे?

A. राजेंद्र प्रसाद

B. सी.आर. दास

C. मोतीलाल नेहरू

D. भगत सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

मुंडाओं ने विद्रोह खड़ा किया-

A. 1885 में

B. 1888 में

C. 1890 में

D. 1895 में

© Dr. Amit Kumar Singh

मुंडाओं ने विद्रोह खड़ा किया-

A. 1885 में

B. 1888 में

C. 1890 में

D. 1895 में

© Dr. Amit Kumar Singh

कूका आंदोलन को किसने संगठित किया?

A. गुरु रामदास

B. गुरु नानक

C. गुरु राम सिंह

D. गुरु गोविंद सिंह

© Dr. Amit Kumar Singh

कूका आंदोलन को किसने संगठित किया?

A. गुरु रामदास

B. गुरु नानक

© Dr. Amit Kumar Singh

C. गुरु राम सिंह

D. गुरु गोविंद सिंह

कानपुर षडयंत्र मुकदमा किस आंदोलन के नेताओं के विरुद्ध था?

A. खिलाफत आंदोलन

B. असहयोग आंदोलन

C. साम्यवादी आंदोलन

D. क्रांतिकारी आंदोलन

© Dr. Amit Kumar Singh

कानपुर षडयंत्र मुकदमा किस आंदोलन के नेताओं के विरुद्ध था?

A. खिलाफत आंदोलन

B. असहयोग आंदोलन

© Dr. Amit Kumar Singh

C. साम्यवादी आंदोलन

D. क्रांतिकारी आंदोलन

वेलु थम्पी ने अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन का नेतृत्व किया था

A. केरल में

B. महाराष्ट्र में

C. मैसूर में

D. तेलंगाना में

© Dr. Amit Kumar Singh

वेलु थम्पी ने अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन का नेतृत्व किया था

A. केरल में

B. महाराष्ट्र में

C. मैसूर में

D. तेलंगाना में

© Dr. Amit Kumar Singh

जिस आदिवासी नेता को जगत पिता (धरती आबा) कहा जाता था, वह था

A. जिरिया भगत

B. कानु सान्याल

C. रूप नायक

D. बिरसा मुंडा

© Dr. Amit Kumar Singh

जिस आदिवासी नेता को जगत पिता (धरती आबा) कहा जाता था, वह था

A. जिरिया भगत

B. कानु सान्याल

C. रूप नायक

D. बिरसा मुंडा

© Dr. Amit Kumar Singh

कोल विद्रोह (1831-32) का नेतृत्व किसने किया?

A. बुद्धू भगत

B. सुर्गा

C. सिगराय

D. जतरा भगत

© Dr. Amit Kumar Singh

कोल विद्रोह (1831-32) का नेतृत्व किसने किया?

A. बुद्धू भगत

B. सुर्गा

C. सिगराय

D. जतरा भगत

© Dr. Amit Kumar Singh

मोपला आंदोलन (1921) कहां हुआ था?

A. तेलंगाना

B. मालाबार (केरल)

C. मराठवाड़ा

D. विदर्भ

© Dr. Amit Kumar Singh

मोपला आंदोलन (1921) कहां हुआ था?

A. तेलंगाना

B. मालाबार (केरल)

© Dr. Amit Kumar Singh

C. मराठवाड़ा

D. विदर्भ

संथाल विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

A. सिद्धू कान्हू

B. भैरव-चांद

C. (a) और (b) दोनों

D. दोनों में से कोई नहीं

© Dr. Amit Kumar Singh

संथाल विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

A. सिद्धू कान्हू

B. भैरव-चांद

© Dr. Amit Kumar Singh

C. (a) और (b) दोनों

D. दोनों में से कोई नहीं

खैरवार आदिवासी आंदोलन कब हुआ?

A. 1874

B. 1860

C. 1865

D. 1870

© Dr. Amit Kumar Singh

खैरवार आदिवासी आंदोलन कब हुआ?

A. 1874

B. 1860

C. 1865

D. 1870

© Dr. Amit Kumar Singh

1855 ई. में संथालों ने किस अंग्रेज कमांडर को हराया?

A. कैप्टन नेक फेविले

B. लेफ्टिनेट बास्टीन

C. मेजर बारो

D. कर्नल ह्वाइट

© Dr. Amit Kumar Singh

1855 ई. में संथालों ने किस अंग्रेज कमांडर को हराया?

A. कैप्टन नेक फेविले

B. लेफ्टिनेट बास्टीन

© Dr. Amit Kumar Singh

C. मेजर बारो

D. कर्नल ह्वाइट

बंबई में अखिल भारतीय व्यापार संघ कांग्रेस की स्थापना कब हुई -

A. सन् 1920

B. सन् 1925

C. सन् 1929

D. सन् 1935

© Dr. Amit Kumar Singh

बंबई में अखिल भारतीय व्यापार संघ कांग्रेस की स्थापना कब हुई -

A. सन् 1920

B. सन् 1925

C. सन् 1929

D. सन् 1935

© Dr. Amit Kumar Singh

अक्टूबर, 1920 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए ताशकंद में एकत्र हुए भारतीयों के समूह के मुखिया निम्नलिखित में से कौन थे?

A. एच.के. सरकार

B. पी.सी. जोशी

C. एम.सी. छागला

D. एम.एन. राय

© Dr. Amit Kumar Singh

अक्टूबर, 1920 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए ताशकंद में एकत्र हुए भारतीयों के समूह के मुखिया निम्नलिखित में से कौन थे?

A. एच.के. सरकार

B. पी.सी. जोशी

© Dr. Amit Kumar Singh

C. एम.सी. छागला

D. एम.एन. राय

I ENJOYED TEACHING EACH AND EVERY MOMENT OF THE CLASS

Thank you!

